कदली, सीप, भुजंग मुख , स्वाति एक गुण तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दिन।

प्रस्तुत दोहे में रहीम ने बड़ी ही सुंदरता से यह बताया है कि संगति का व्यक्ति के ऊपर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। मनुष्य का आचरण, स्वभाव, उसकी संगति से ही निश्चित होते हैं।

इस बात को स्पष्ट करने के लिए कवि वर ने बहुत ही उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। वह कहते हैं कि स्वाति नक्षत्र में हुई वर्षा की सभी बूंदे एक समान होती हैं, किंतु धरातल पर भिन्न-भिन्न स्थानों पर गिरने से एक समान वर्षा की बूंदों में भिन्न-भिन्न गुणों का प्रतिपादन हो जाता है।

अर्थात वर्षा की बूंद जहां-जहां पड़ती हैं, वैसी ही बन जाते हैं। कदली में पड़ने पर वर्षा की बूंद कपूर में परिवर्तित हो जाती हैं, वहीं यदि वही वर्षा की बूंद सीप में गिर जाए, तो बहुमूल्य मोती का रूप धारण कर लेती है, और वहीं यदि भुजंग अर्थात विषैले सर्प के मुंह में गिर जाए तो शीतल बूंद से विष में बदल जाती है।
अतः कबीर कहते हैं कि आप जैसी संगति में रहेंगे, जैसे व्यक्ति की सानिध्य को धारण करेंगे, वैसे ही बनेंगे।

इस दोहे से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम जैसे हैं, उसका बहुत बड़ा हिस्सा हमारी संगति से निश्चित होता है । क्योंकि संगति से ही गुण आते एवं जाते हैं। अतः हमें अपनी संगति सदैव अच्छी रखनी चाहिए ताकि हम में उत्कृष्ट गुणों का आगमन हो।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष ब्याप्त नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।

प्रस्तुत दोहे में कवि रहीम ने बताया है कि वह व्यक्ति जो स्वभाव से उत्तम एवं जिसका अपने मन विचार एवं वचन पर पूरा नियंत्रण होता है, वह अच्छी - बुरी संगति के प्रभाव से मुक्त रहता है।

दोहे की प्रथम पंक्ति में रहीम जी कहते हैं, कि जो व्यक्ति उत्तम प्रकृति के होते हैं, बुरी संगति भला ऐसे व्यक्ति का क्या बिगाड़ सकती है ? उत्तम प्रकृति के लोगों से तात्पर्य है अच्छे स्वभाव वाले मनुष्य।

कविवर ने चंदन के वृक्ष उदाहरण देते हुए कहा है कि चंदन के सुगंध मई पेड़ से कई विषैले सर्प लिपटे हुए रहते हैं, किंतु उन सर्पों के लिपट के रहने से चंदन के वृक्ष में विष व्यापत नहीं होता, अर्थात फैलता नहीं है।
सर्पों के विश का चंदन के वृक्ष पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ठीक उसी प्रकार, बुरी संगति उत्तम पुरुष पर कोई प्रभाव नहीं डाल पाती।

प्रस्तुत दोहे से रहीम जी ने हमें यहां बहुमूल्य सीख दी है कि हमें अपने विचारों, आचरण एवं स्वभाव में इतनी शुद्धता एवं दृढ़ता लानी चाहिए कि किसी की अनुचित विचार अथवा गलत आचरण का हम पर किसी प्रकार से कोई दुष्प्रभाव ना पड़े।

हम संगति के प्रभाव एवं दुष्प्रभावों से मुक्त हो जाए।

वरदान– आप अपने 5 दोस्तों का औसत ही बनते हैं इसलिए अपने जीवन में दोस्तों का चुनाव सही से करें।